"दिलदार दिल्ली"

HIN-527 [हिंदी क्षेत्रों में अध्ययन यात्रा]

श्रेयांक : 2

स्नातकोतर कला (हिन्दी प्रथम वर्ष)

"प्राची काशीनाथ पै आंगले"

अनुक्रमांक : 23P0140011

PRNumber : 202004030

शणै गोंयबाब भाषा और साहित्य महाशाला

हिन्दी अध्ययन शाखा

15/20

गोवा विश्वविध्यालय

अप्रैल 2024

परीक्षक : 3/5/24

	की बावड़ी, राष्ट्रिय बाल भवन, राजघड़, गांधी दर्शन म्यूज़ियम, लाल किला, जमा मस्जिद, सरोजिनी मार्केट	
७	निष्कर्ष	31-32

अनुक्रमणिका

क्रमांक	विषय सूची	पृस्ट संख्या
1	प्रस्तावना	1-3
२	पहला दिनः अक्षरधाम की यात्रा	4-5
३	दूसरा दिनः इंडिया गेट, नेशनल वर मेमोरियल , साहित्य अकादमी, लोटस टैम्पल, हुमायु का मकबरा और बिरला मंदिर की यात्रा	6-13
४	तीसरा दिनः दिल्ली विश्वविध्यालय, हिन्दू कॉलेज, JNU, कुतुब मीनार	14-20
५	चौथा दिनः ताजमहल, मथुरा, वृंदावन	21-22
६	पाचवा दिनः अग्रसन	23-30

प्रस्तावन

प्रथम सेमेस्टर खत्म होने के बाद भ्रमण पेपर के बारे में बताया गया। मेरा मन मुझे बोल रहा है की जाओ इस भ्रमण में जरूर जाओ, क्योंकि ९वी कक्षा में हैदराबाद का भ्रमण था तब मैं नहीं जा पाई थी। यह पेपर २ क्रेडिट का है और कहा जायेंगे इसलिए में एक्साइटेड थी। एक दिन जगह के बारे में कन्फर्मेशन आया की कहा जायेंगे और वो थी ' **दिल्ली**' कहते हैं की दिल्ली दिलवालो की। कुछ समस्याओं के कारण भ्रमण को रद्द करना पड़ा। लेकिन हमारे प्राध्यापको ने कैसे भी करके तारीख फाइनल करके टिकट बुक करवाई । १८ मार्च से लेकर २६मार्च तक हमारा भ्रमण था। मैं तो इंतजार कर रही थी की कब यह समय आएगा?

तो वो समय आ गया १७ मार्च को मैंने अपना सूटकेस में कपड़े और अपने जरूरत की चीजे डालकर पैक किया। रात को तो नींद भी नहीं आ रही थी। १८ मार्च २०२४ भ्रमण के लिए तैयार। मडगांव रेलवे स्टेशन पर २ बजे से पहले पहुंचना था, तो मैं पहले पहुंच गई। मेरे हाथ में एक सूटकेस और कंधे पर एक बैग। हमारी ट्रेन ३:३० बजे आई और ट्रेन का नाम **निजामुद्दीन** था । मुझे सी ऑफ करने के लिए मेरी मां और मेरा छोटा भाई आये थे। ट्रेन आई और में अंदर घुसी। पहले तो मुझे देखना था की सीट का नंबर कौन सा का है? ट्रेन के अंदर इतने भीड़ थी की में सीट ६१ पर बैठी। मुझे नीचे वाली सीट मिली। हमारे शिक्षक हम सबको बैठने के लिए सबको सीट का नंबर दे रहे थे और दूसरी तरफ मेरी मां को में बाय न बोल पाई। मेरे दोस्त के भाई के वजह से में अपनी मां और भाई को देख पाई और आखों में आसू आ गए। बिना परिवार के पहली बार भ्रमण के लिए जा रही थी। ट्रेन छुट्टी और मेरी यात्रा का आरंभ हो गया। मेरे सीट के बगल में ही एक कोहलापुर का एक आदमी बैठा हुआ था। मेरे आखों से देखो तो एक भला आदमी

३ एस्केटर पर चडकर मुझमें एक कॉन्फिडेंस आया। मेट्रो में तो मेरा पहला सफर था। बहुत मजा आया।

७ बजे नई दिल्ली पहुंच गए और हमे ३ घंटे मेट्रो पर रुखना पढ़ा क्योंकि हमारे प्राध्यापक होटल और ट्रास्पोर्ट देखने के लिए गए थे। ३ घंटे होने के बाद हम सभी ने एग्जिट गेट से बाहर गए और देखा की हमे २० सीढ़िया से अपने समान के साथ चढ़नी थी। बाहर पहुंचकर १ १/२ घंटा और रखना पढ़ा। मैंने सिर्फ सुना था की दिल्ली में पॉल्यूशन है , मैने वह अपने आखों से देख भी लिया। हमारे शिक्षक के आने के बाद रिक्शा कारवाही और हम अपने मंजिल की ओर निकल पढ़े।

था और उने डायबिटीज थी इसलिए मुझे बार बार कहे जा रहा था की मैं टॉयलेट जाकर आता हूं। ८:३० बजे खाना खाकर में इंतजार कर रही थी की कब यह आदमी का स्टेशन आएगा? मेरा तो एक फिक्स्ड समय सोने का होता है। १० बजे तक मुझे जागना पड़ा और फाइनली उनका स्टेशन आ गया और मैंने अपना बेड लगाया और सो गईं। मैं तो बिलकुल सो नहीं पाई थी क्योंकि बैग को भी तो देखना था। बीच बीच उठकर मैं अपना बैग देखतीrahti थी। रात के २ बजे मेरे सामने के सीट पर एक परिवार आया था। मैं उनको कभी भूल भी नही सकती ५ बच्चे, २ औरते और २ आदमी थे । समय बिता गया और ४:१५ में एक आदमी आकर सुविधा का बैग उसके सीट में से को दूसरी सीट पर रखने वाला था तब प्रितेश ने उसे टोका और उससे पूछताछ की, और वो टीसी के नाम भाग गया। देखते देखते सुबह हो गई लेकिन मैं फिर से सो गई। और एक दिन दिल्ली आने के लिए बचा था।

मैं वो इंतजार कर रही थी कब रात हो और जल्द से सुबह हो जाए, पर ऐसा नही होता। मैं अपने दोस्तो के साथ बैठकर काईस खेली, खाना खाया और सो गयी । सिर्फ यही मेरा काम था। रात हो गई और मैं सोने के लिए गयी , सुबह जल्दी उठकर मैने अपना सामान पैक किया और तैयार हो गई। २० मार्च को मेरा बर्थडे था , यह मेरा पहला बर्थडे बिना परिवार के इतनी दूर। ६:१५ को हम दिल्ली पहुंच गए। एक एक का सामान उठाकर प्लेटफार्म पर रख रहे थे। दिल्ली का वातावरण में ठंडाई थी। हमारे एक शिक्षक आगे और २ पीछे थे। मैंने स्टेशन पर देखा की ऊपर जाने लिए एस्केल्टर था , उससे मुझे चढ़ने के लिए दर लगता था पर मैं एक कॉन्डिफेंस के साथ उसपर खड़े हो गई । हमे नई दिल्ली पहुंच ने के लिए २ मेट्रो करने पढ़े और वहा पर भी एस्केल्टर। मेरी तो हालत खराब हो गई, सोच में पढ़ गई की आज मेरा बर्थडे और इतना डरावना गिफ्ट मुझे मिला। २ से

पहला दिन (20 मार्च 2024)

होटल में पहुंचने के बाद सर ने हमे रूम अलॉट कर दिया। रूम में मेरे साथ ३ और सहेलियां थी। हम चारो फ्रेशेनअप होकर रिसेप्शन पर गए और बैठे। हमारे साथ २ प्राध्यापक थे जो हम सभी को पहला स्पॉट देखने के लिए गए। उस स्पॉट को देखने के लिए मेट्रो करनी पढ़ती है। सर ने हम सभी की टिकट निकल वाई और हम चले।

हम ४:४५ बजे **अक्षरधाम** पहुंच गए। अपने टीवी पर देखन और हकीकत में देखना कुछ ओर ही है। एंट्री करने के लिए हमे अपना बैग काउंटर पर देना पड़ता है। फोन भी अंदर लाने को नहीं मिलता था। अंदर जाते ही अक्षरधाम का इतिहास लिखा हुआ है। अक्षरधाम में एक मोर की स्टाइल में गेट है, उस पर कार्विंग्स और आर्किटेक्चर बहुत सुंदर है।

अक्षरधाम के अंदर जाने के लिए हमे अपने सैंडल बाहर रखना पड़ा। अक्षरधाम का शाब्दिक अर्थ है अक्षर का अनंत और धाम का निवास। यह जगह यमुना नदी किनारे के ढांचा पर खड़ा है। स्वामीनारायण की मूर्ति श्रद्धांजलि के रूप में निर्माण किया गया है। इस अक्षरधाम का उद्घाटन ६ नवंबर २००५ में हुआ। उनकी यह ११ फीट की प्रतिमा है, और खासियत उनकी वास्तुकला है।

यह मंदिर गुलाबी बलुआ पत्थर और सफेद संगमरमर से बनी हुई है। इस मंदिर को बांधने के लिए स्वामी महाराज और बोचासनवासी श्री अक्षर पुरुषोत्तम स्वामीनारायण संस्था का योगदान है। वहा पर राम सीता, शंकर पार्वती, राधा कृष्ण की मूर्तियां है। उसी के साथ स्वामीनारायण के बालपन का इतिहास लिखा हुआ है। अक्षरधाम को देखकर हमे ६:३० हो गए। सर ने हमको फूड कोर्ट पर जाकर खाना खाने के लिए बोला और कुछ विद्यार्थी हमारे बैग काउंटर से लाने के

लिए गए। हम सभी ने एग्जिट करके होटल के तरफ जाने के लिए निकल पड़े। बाहर हम सभी ने एक ग्रुप फोटो खिंचाई। फिर से मेट्रो पकड़कर हम सब होटल पहुंच गए।

, लेकिन वह असली है। यह जगह देखने के बाद हम एक बाग में बैठे और बाकी विद्यार्थी के लिए रूखे। थोड़े समय के बाद सभी विद्यार्थी आ गए और हम बस में बैठ गए। अब मैं इंतजार कर रही थी अब हम किस जगह पर जायेंगे? हमारे सिर ने हमे MLA का रोड दिखाया।

दूसरा दिन (21 मार्च 2024)

सुबह नहा धोकर हम तैयार हो गए। हमारे साथ एक और प्राध्यापक जुड गए और वो थे हमारे आदित्य सर जिनोने पूरी दिल्ली तो देखी थी , लेकिन हमारे साथ कंपनी देने के लिए आ गए। सर ने ३ ग्रुप बनाकर वे हमे अपने साथ लेकर बस में बैठकर हमने अपनी भ्रमण की शुरुवात की। पहले हम **इंडिया गेट** पहुंचे, वहा की सुंदरता देखी। उस जगह का इतिहास क्या है वह जाने की कोशिश की, उस गेट पर इतिहास लिखा हुआ था।

मुझे यह पता चला की इंडिया गेट एक युद्ध स्मारक का प्रतीक है। इंडिया गेट प्रथम विश्व युद्ध समें अपने प्राणों की आहुति देने वाले ७०, ००० सैनिकों को श्रद्धांजलि है। इस जगह पर कई सारे फिल्म्स बनी हुई है जैसे की हाफ गर्लफ्रेंड (इंडिया गेट के ऊपर बैठने का सीन), ऐयारी आदि। मैंने इस जगह पर एक ग्रुप फोटो के साथ अपना खुदका पिक्चर खींचा। सर हमे आगे क्या है वह देखने के लिए चले गए।

आगे देखते है तो **नेशनल वार मेमोरियल** स्मारक था। अंदर जाने के लिए चेकिंग करते है। वहा पर १९४७ के बाद, भारतीय सैनिकों की मकबरों को समर्पित किया गया है और उन पर तारीख और नाम लिखा हुआ था । उस तारीख परउनके परिवार आकर उनपर फूलो का हार पहनाते थे । मैंने देखा की वहा पर एक और स्मारक है: **अमर जवान ज्योति**, जो हर वक्त जलती रहती है। १९७१ भारत पाकिस्तान युद्ध के दौरान भारत के सैनिकों को जान गवाने पड़ने के याद में यह इंडिया गेट पर बनाया गया।

अमर जवान ज्योति के बैरल पर रायफल के साथ एक काले संगमरमर पर स्मारक है। जिस पर एक सैनिक खड़ा हुआ है। पहले मुझे लगा की यह सिर्फ एक पुतला है

हमने तो **साहित्य अकादमी** का नाम सिर्फ सुना था पर कभी देखा नहीं था। हमारे गोवा विश्वविद्यालय के प्राध्यापक को साहित्य अकादमी देकर समानित किया गया है। इस अकादमी का निर्माण १९६४ में हुआ है। इस अकादमी के अंदर जाते ही लाइब्रेरी देखी जो हर कैटेगरी के किताबो से भरी हुई है, जैसे की **भगवतगीता के ६ किताबे है, साथ ही इतिहास के किताबे, और कही सारे शब्दकोष आदि।** सर ने हमे **ललित कला अकादमी के अंदर गए और वहा पर नाटक और रंगमंच की किताबे रखी गई है जैसे की:कलावसुधा, विहंगम, संगीत नाटक, नटरंग, इप्टावर्त, (नाटक की पत्रिका), गंगानाचल साहित्य कला एवं संस्कृति का संगम। कलावसुधा (पादरी कलावो की जमासिल पत्रिका), रचनात्मक दिमाग साहित्य, कला और संस्कृति पर पत्रिका, नाटक बुदरेती त्रैमासिकः थिएटर में चल रहा एक संवाद।** इसके के बाद हम संगीत कला अकादमी के अंदर गए। वहा पर कही सारे इंस्ट्रूमेंट्स रखे हुए है और वहा के सर ने हमे उनकी जानकारी दी गई।

लोटस टैम्पल के बाद हम **हुमायूँ का मकबरा** देखने के लिए गए। इस मकबरे को प्यार का नाम दिया गया है। यह मुग़ल साम्राज्य की ताकत का प्रतीक है जिसने एक समय पूरे देश पर शासन किया था। यह भी कहते है की इस मकबरे को बाँदने के बाद ताजमहल बनवाया गया। **बेगम हमीदा बानो ने अपने पति की दुर्भाग्यपूर्ण मृत्यु से बहुत दुखी होकर उन्होने साम्राज्य में सबसे शानदार मकबरा बनाने का फैसला किया।** इस मकबरे के अंदर जाते ही एक पिल्लर(साइन बोर्ड) देखा। इसके ऊपर पूरी जानकारी लिखी हुयी है। हुमायूँ के पश्चिमी दरवाजे से अंदर जाते ही दोनों तरफ छोटे छोटे म्यूज़ियम बने हुये है।

साहित्य अकादमी के बाद **लोटस टैम्पल** देखने के लिए निकल पड़े। उस मंदिर को कमल मंदिर भी कहते है। हम वहा 4:30 बजे पहुचे और अंदर जाने के लिए एक लंबी लाइन और चेकिंग भी करते है। दिल्ली और गोवा में एक फरक है तो वो चेकिंग करके अंदर भेजना। उस मंदिर के अंदर जाने के लिए पहले तो इतनी भीड़ और लाइन। वहा काउंटर पर थैलियो में अपने चप्पल रखना पड़ता है। वहा का पानी नीले रंग का है। पहले मुझे लगा किसी देवी देवताओ का मंदिर होगा, लेकिन ऐसा नहीं है, वहा पर बैठकर अपने मन को शांत रहकर उसका मज़ा उठाना है। हम अपने मन में इतना स्ट्रैस लेते है और अपने दिमाग को एक रेस्ट भी नहीं देते है। इस मंदिर के अंदर बैठकर बहुत अच्छा लगा। यह मंदिर पंखुड़ियों से बनी हुयी है। यह मंदिर 1986 में सार्वजनिक पुजा के लिए समर्परीत हुयी। यह **बहाई उपासना ग्रह है, जो भारत के बहाइयों की राष्ट्रीय आध्यात्मिक सभा की संपती है और इसका स्वामित्व उसके पास है।**

यह मकबरा 38 मिटर ऊंचा और इसे इस तरह से बनाया गया है की यह किसी भी कोने से एक जैसा दिखता है। **इसका डिज़ाइन फारसी शैली से प्रभावित है, यह लाल बलुआ पत्थर और सफेद संगमरमर से बनाया गया है। यहा की वास्तुकला की एक नयी शैली का संकेत देता है।**

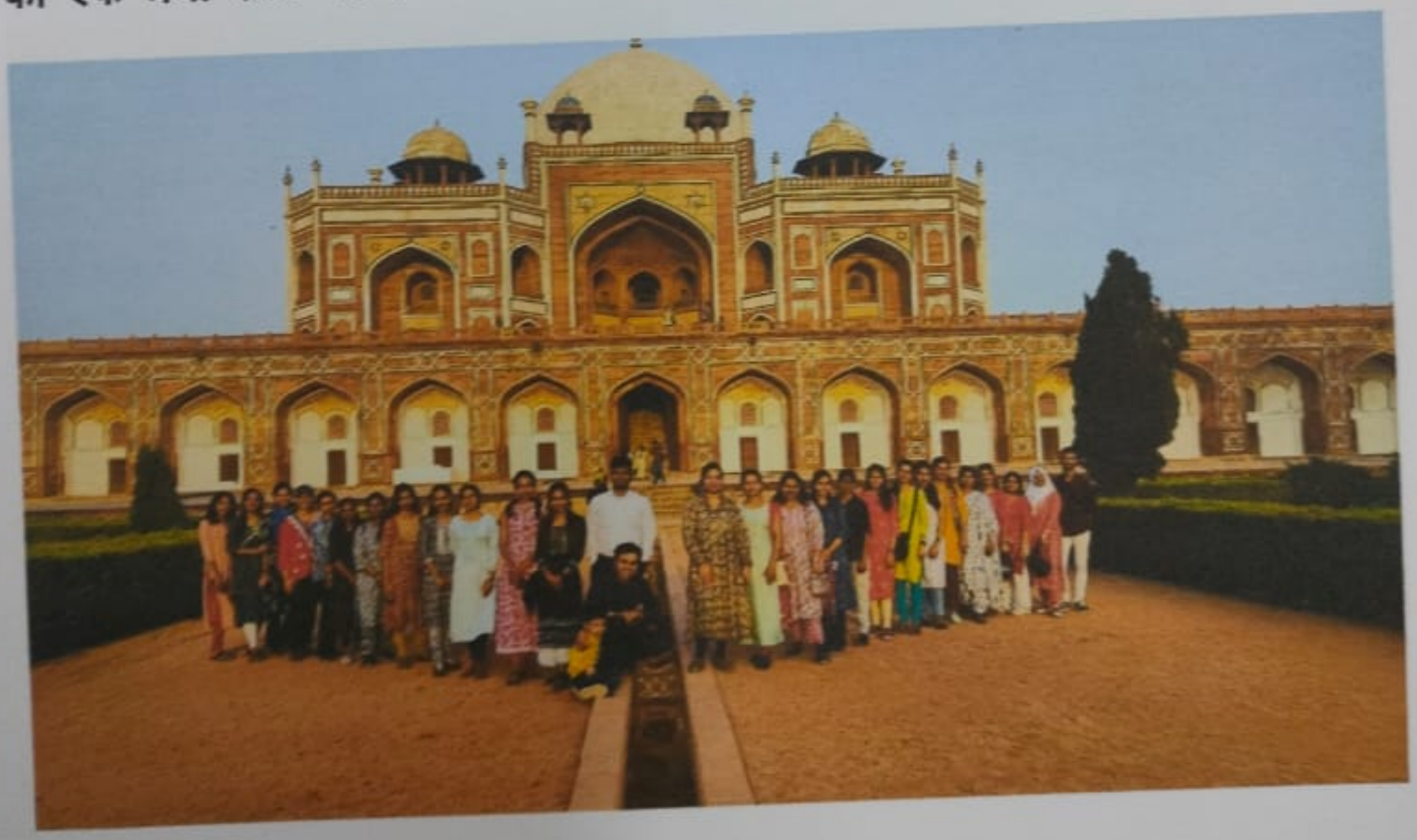

मकबरे के अंदर प्रवेश करते ही छत देखी कितने बारीकी से काम किया गया है। जालीदार खिड़की में अंदर जाते ही हुमायु का मकबरा दिखाई दिया। इस जाली का भाग geometricalपैटर्न है। वे जालीदार स्क्रीन के रूप में कार्य करते है। जिसे सूर्य की रोशनी आंतरिक भाग में प्रवेश करती है। हुमायु का मकबरा **अरबी लिपि** से यहा दरवाजे बने हुये है।

इसके साथ अन्य कक्ष भी बने हुये है। कहते है की इसी 3 कक्षा में बेगम हमीदा बानो का कब्र भी है।

हुमायु का मकबरा देखने के बाद हमारे सर ने **बिरला मंदिर** जाने का फैसला किया और हमे वे लेकर गए। इस मंदिर में भी अपना सामान हो या शूज काउंटर पर देना पड़ता है। एक नियम सा बन गया है। गोवा में राधाकृष्ण का मंदिर है जो उसे बिरला मंदिर भी कहा जाता है। यहा पर भी **लक्ष्मीनारायण के मंदिर को बिरला मंदिर कहते** है। मुझे उनकी भव्य दर्शन प्राप्त हुये। सुबह से रात तक चलते चलते थक भी गए , लेकिन इस मंदिर में थोड़े समय बैठकर आराम मिला और आनंद भी आया। इस मंदिर के पास गणपति, हनुमान जी का मंदिर भी है।

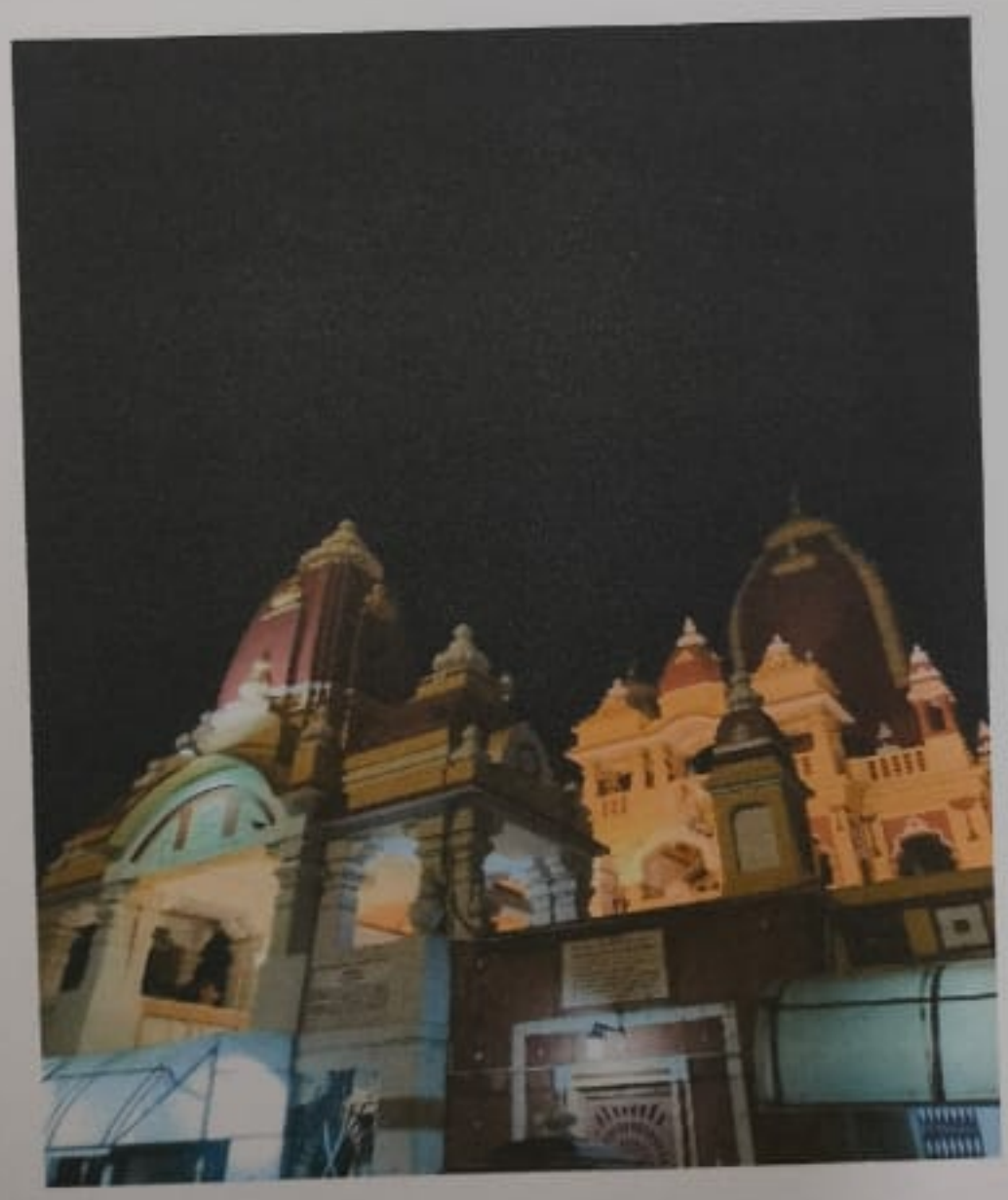

तीसरा दिन(22 मार्च 2024)

सुबह जल्दी उठकर 9:00 बजे हमने नाश्ता किया और सीधे हमारी बस यात्रा शुरू हो गयी। 10:45 के करीब हम **दिल्ली विश्वविध्यालय** पहुच गए। होली के कारण विध्याथियों को छुट्टी थी। हमारे सर हमे अंदर ले जाने के लिए वहा के प्राध्यापको से पर्मिशन लेकर आ गए और हमने बाहर से एक ग्रुप फोटो लिया। इस विश्वविध्यालय में हमारे सर बिपिन तिवारी जी पढ़े है। हमने इस विश्वविध्यालय के हिन्दी विभाग का एक फेरा लिया, वहा की लाइब्ररी देखि। मेरे लिए तो एक अच्छा एक्सपिरियन्स रहा।

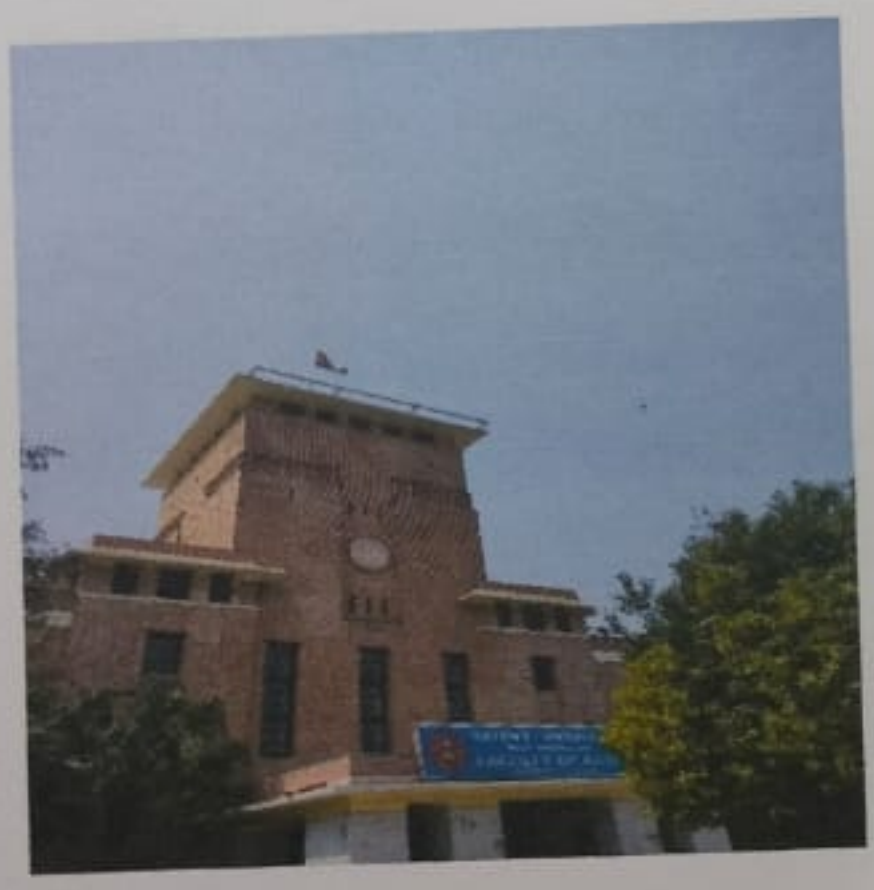

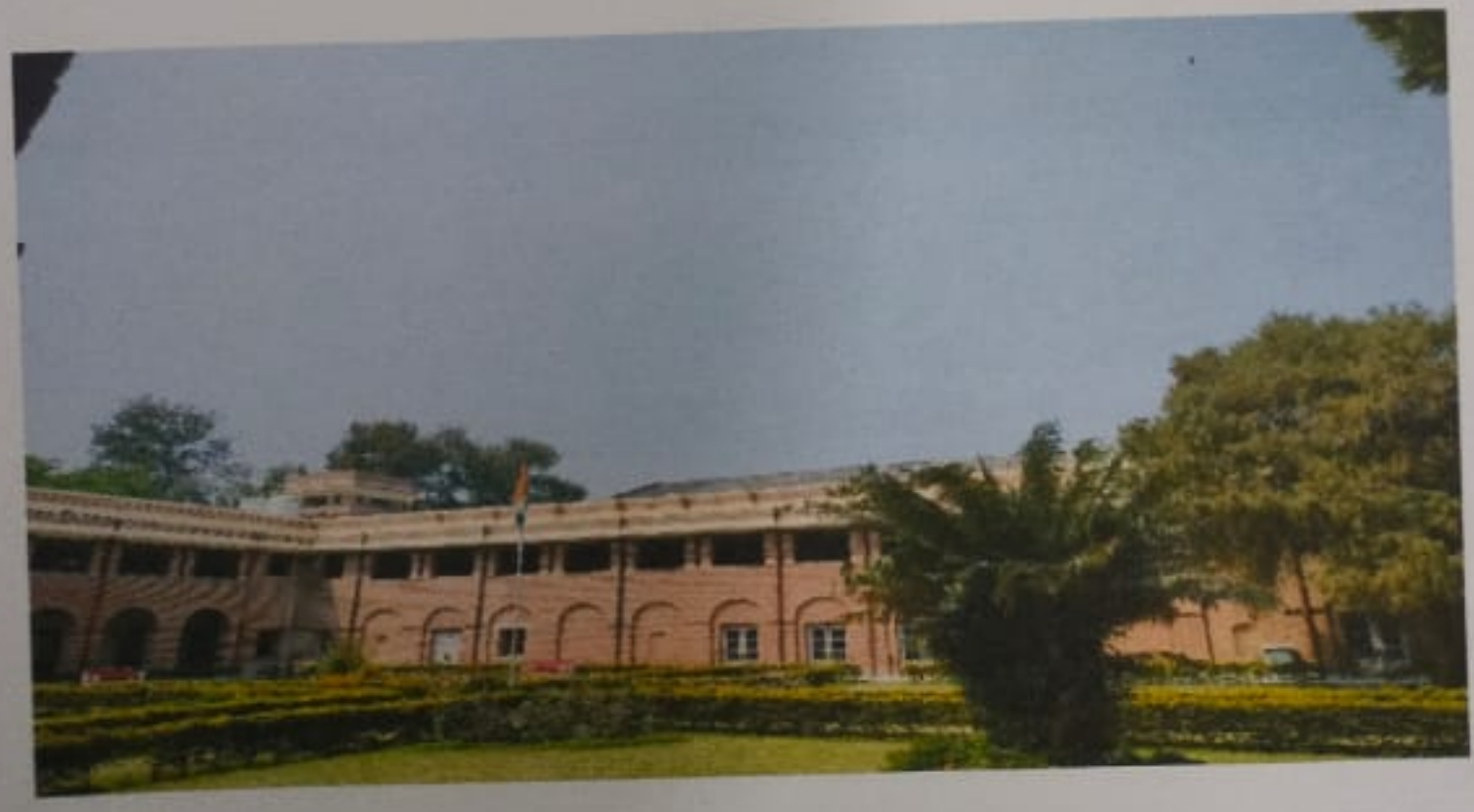

सेंटर कहा जाता है। यहा पर 5 यूक्रेनी छात्र अध्ययन कर रहे है और इस कॉलेज की एक पत्रिका भी निकल वाई है और वो है **"हस्ताक्षर"** । हिन्दू कॉलेज में राजनीतिक, हिन्दू एक जीवन शैली है जो सर्वसतावादी का प्रतिनिदित्व करती है।

इसके बाद हम **हिन्दू कॉलेज** पहुचे जो उस एरिया के पास ही था। हिन्दू कॉलेज के अंदर देखा की नोटिस बोर्ड पर विध्यार्थियों ने चार्ट्स बनाए थे जो मुझे बहुत आकर्षित लगे । इस कॉलेज को 125 वर्ष हो गए है। इस कॉलेज का **अभिरंग ग्रुप** है और उनकी वाल मैगजीन **"लहर"** है। इस कॉलेज का वार्षिक महोत्सव **"मेका"** होता रहा है। इस कॉलेज के भ्रमण करते वक्त स्पोर्ट्स कॉम्प्लेक्स "रिलेक्सों" , रिसर्च सेंटर, ऑडिटोरियम में फिल्म्स दिखने है और सेमिनार भी होते है। बाई तरफ में बॉय्ज़ हॉस्टल को ध्वस्त कर दिया है गया है और साथ ही गर्ल्स हॉस्टल भी है।

इस कॉलेज में उन छात्रो की **अलुमिनी गललेरी** है, जिनहोने इस कॉलेज से पढ़ाई की है। विशेषकर मशहूर हस्थिया, कलाकार, क्रिक्केटर आदि। यहा इमितीयज आली ने नाटक की शुरुवात की जो आज बॉलीवुड के डाइरेक्टर बने हुये है। इनहोने काही सारे फिल्म्स बनाए है जैसे की जब वे मेट, जब हैरी मेट सेजल और आदि। इस कॉलेज को सैंट स्टिवेन, हिन्दू या हेरितागे

हिन्दू कॉलेज देखने के बाद हम बस में बैठकर JNU(**जवाहरलाल नेहरू विश्वविध्यालय**) देखने के लिए निकल पड़े। दोपहर के 1:40 बजे हुये थे, तब हमारे सर ने हमे मदर टेरेसा क्रेसैंट पर 11 मुरठिया दिखाई गयी। जब हम उस रास्ते से जा रहे थे तब फ़्रांस की बस्सी और कई सारी बस्सी दिखाई दे पड़ी। JNU में डॉ. आंबेडकर की नेशनल लाइब्ररी देखि और वहा पर कई सारे कितबे थी जैसे, आलोचना, काव्यशात्र आदि। हम इस विश्वविध्यालय के अंदर नहीं देख पाये क्यूंकी यहा इलैक्शन चल रहे थे।

चौथा दिन (23 मार्च 2024)

23 मार्च को सुबह 4:00 बजे उठे और तैयार हो गए। 5:00 बजे तक बस में बैठकर निकल पडे। ठीक 10:25 को आगरा पहुचे। **ताजमहल** का डिज़ाइन स्य्म्मेत्रीयकल है और शुक्रवार को बंद होता है। अंदर जाने के लिए गाड़ी होती है और उसके साथ चेकिंग भी होती है। हमारे साथ एक गाइड थे जिनहोने ताजमहल के बारे में जानकारी दी।

वे कहने लगे की यह सफेद संगमरमर से बना हुआ है। ताजमहल के बाई तरफ एक म्यूज़ियम है जो वहा का इतिहास लिखा हुआ है। वहा पर महत्वपूर्ण जानकारी लिखी हुयी है जैसे की **फरमान, सनद, मुग़ल पैंटिंग्स, कोइन्स, कलिग्राफी** आदि। ताजमहल महान मुग़ल सम्राट शाहजहाँ द्वारा बनाई गयी है, अपनी प्रिय पत्नी मुमताज़ की यादों में।

हम सभी ने ताजमहल का बाहरी तरफ तो देखा अब सिर्फ अंदर जाना बाकी रह गया था। अंदर जाते ही सामने एक मकबरा है। गाइड ने बताया की इसके नीचे शाहजहाँ और मुमताज़ का असली मकबरा रखा हुआ है। फरवरी के महीने में लोक यहा देखने के लिए आते है। **आगरा का प्राचीन पेठा मशहूर है।**

6:10 बजे **कुतुब मीनार** पहुचे। यहा पर पहुचकर सर ने हम सभी को अंदर जाने के लिए टोकन दिया। हम सभी ने फोटो वैगरे खीचे। इस मीनार का इतिहास कुछ और ही है। वहा पर कुतुब उद्दीन ऐबक का मकबरा है।

यह मीनार लाल और सफेद बलुआ पत्थर से बना है। 1206– 1232 में गुलाम वंश के शासक कुतुब उद्दीन ऐबक के शासनकाल के दौरान कुतुब मीनार का निर्माण **"विजय का प्रतीक के रूप में किया गया है"** । यह मीनार सूफी संत बक्थियार काकी को उपहार में दे दिया। यह मीनार 713 मिटर का है और वास्तुकला इंडो तुक्री शैली है। इसके बाद हम 7:00 बजे से वहा से बस में बैठकर निकल पड़े।

और मुझे **मथुरा और वृन्दावन** की होली देखने के लिए उत्सुख थी। मथुरा पहुचे और इतनी भीड़ थी की हम सभी को दूसरों हात पकड़कर रहना पड़ता था। हर किसी का सपना होता हैं मथुरा और वृन्दावन को जाने और दर्शन लेने का, यह मौका मुझे मिला। दर्शन लेने के बाद कुछ खरीदगरी की। वहा का **मथुरा पेड़ा** मशहूर है।

इसके बाद हम **वृन्दावन** में श्री कृष्ण का दर्शन लेने के लिए बस में बैठकर निकल पड़े। अंदर जाने के लिए 3 रिक्शा की और चले गए। वहा का किर्ति मंदिर, प्रेम मंदिर, और भक्ति मंदिर के भव्य दर्शन किए। साथ ही कृष्ण की नगरी में उनका मंदिर भी देखा और बाखी बिहारी के दर्शन किए तथा उनको फूल अर्पित कर वहा से निकले। सुबह के 4:00 बजे हम होटल पहुच गए।

पाचवा दिन (24 मार्च 2024)

सुबह 9:00 बजे तक इकटे हो गए और 10:00 बजे **अग्रसन की बावड़ी** देखने के लिए बस में बैठकर बस यात्रा की शुरू हुई । यह जगह कनौट प्लेस के पास स्थित है। अग्रसन में 105 सीढ़िया है। 14वी शताब्दी में **महाराजा अग्रसेन** ने बनाया था। इसका निर्माण लाल बलुआ पत्थर से हुआ है। इस सीढ़ियो के पत्थर अनघड़ गडे है। इस बावड़ी का निर्माण महाभारत के काल में हुआ। उनकी शैली उत्तरकालीन तुगलक तथा लोदी काल की है। इस बावड़ी पर P.K फिल्म बनी हुयी है। रानी की वाव, UNESCO ने विश्व धरोहर घोषित की गयी है, जो विश्व की प्रथम बावड़ी मनी जाती है।

हम 10:30 बजे **राष्ट्रीय बाल भवन** देखने के लिए गए। यह जगह देखने का कोई प्लान नहीं था, वह onthespot बन गया। इसके अंदर कागे में बर्ड्स को रखा हुआ था जैसे rabbits, parrots और आदि । तथा अंदर सुंदर **मिरर आर्ट**, गार्डेन और एक ट्रेन जो पूरे बाल भवन की सहर कराती है।

इसके बाद हम **राजघड़** पर पहुचे। जो महात्मा गांधी की समाधि स्थित है। यह घाट काले संगमरमर से बनी हुयी है। उनके अंतिम शब्द **"हे राम** " लिखा

हुआ है। यहा पास ही में शांति वन है जो भारत के पहले प्रधानमंत्री नेहरू की समाधि है। उस घाट पर कही सारी समधिया है जैसे, लाल बहादुर शश्तरी की विजय घाट, अटल बिहारी वजपाई की सदैव अटल, राजीव गांधी की वीर भूमि आदि ।

गांधी दर्शन म्यूज़ियम -राजघाट के पास ही यह म्यूज़ियम है जो गांधी की पूरी जिंदगी के बारे में है। इस म्यूज़ियम के बाहर चरखे, किताबे, मेडल्स रखे हुई है। म्यूज़ियम के अंदर जाते ही मोहन से महात्मा कैसे बने उनके ओरगीनल pictures के साथ। किस तरह से उन्होने अपने जीवन में संघर्ष किया। म्यूज़ियम के तरफ जाते ही वह पर एक मैसेज लिखा है MYLIFEISMYMESSAGE (मेरा जीवन ही मेरा संदेश है) यह म्यूज़ियम काफी बड़ा है क्यूंकी गांधीजी के बारे में हर चीज़ की पूरी जानकारी पिक्चरो के साथ।

वहा पर नाव देखने को मिला, इसी पर नमक आंदोलन 1930 में किया था। उनके साथ वहा पर एक जीप राखी हुयी थी, जब गांधी जी को गोली लगी थी 30 जनवरी 1948 को। इसी जीप में उन्हे लाया गया था।

उसके बाद रिक्शा से **लाल किला**देखने को गए। रविवार का दिन और इतनी भीड़ की दूसरों का हात, अपना बैग पकड़कर चल रहे थे। हम सभी ने बाहर से ही अपने तस्वीरे खींची।

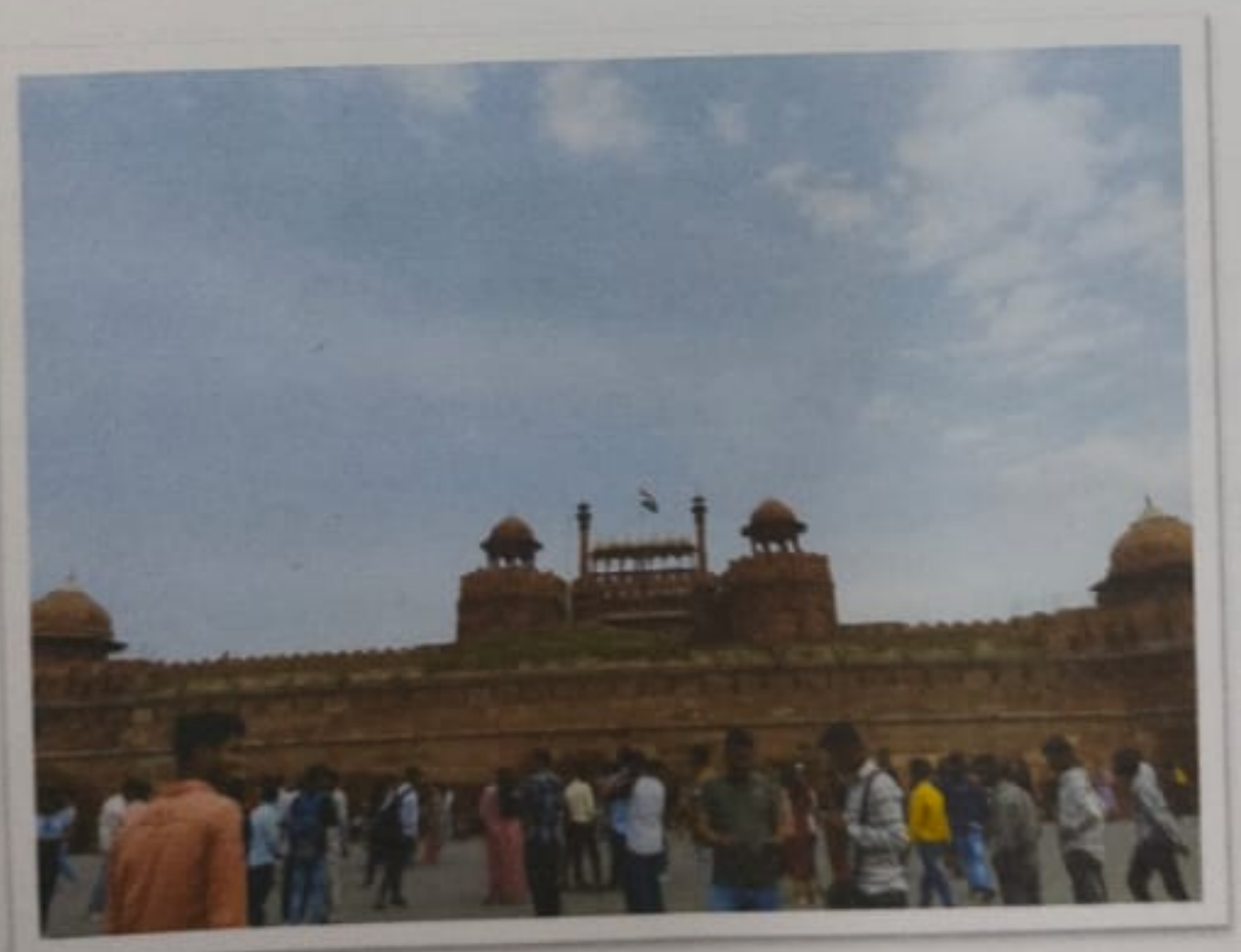

शाम होने आई और सब **सरोजिनी मार्केट** में खरीदी करने के लिए तैयार थे। दिल्ली में आए है तो कुछ तो हम घरवालो के लिए लेना ही था। जानकारी से यह पता चल था की इस मार्केट में हर चीज़ सस्ते में मिलती है और बार्गनिंग भी करनी पड़ती है। पर यहा हर चीज़ का फ़िक्स्ड प्राइस था जो कम करने का नाम ही नहीं ले रहे थे। खरीदी करते करते रात हो गयी। इतना समान खरीदा की बैग में डालने के लिए जगह भी नहीं थी। दौरे दिन हमारी सुबह की 5:00 बजे की ट्रेन थी।

निष्कर्ष

घर जाने को सभी के मन में खुशी दिख रही थी। सुबह के 3:30 बजे को हम सभी होटल के रिसिप्शन काउंटर पर आकर अपने रूम की चाभी दी और समान में रखवा दिया। यह टॅक्सी सेधे स्टेशन तक पहुचा दिया। 3:34 के आसपास हम स्टेशन पहुच गए और जल्दी से सब ट्रेन के लिए दौड़ पड़े। क्यूंकी हुमे देर हो गयी थी और ट्रेन का समय 5:00 बजे का था। हम सभी ने अपना समान अपने हात में लेकर भाग रहे थे और सीधे प्लाटोर्म नंबर 5 में जाकर थिरुवान्थ्पुरम ट्रेन में बैठे। हमारा घर वापसी की ट्रेन यात्रा शुरू हो गयी। ट्रेन में बैठने के बाद में सेधे सोने के लिए चली गयी। सुबह के 10:00 बजे उठकर चाय पी , और हम घर पाहुचने के इतजार में थे पर 24 घंटो का फासला बचा हुआ था। इसके बाद सब मिलके कुछ देर तक काईस भी खेले। इसके बाद हसी मज़ाक के बाद फिर से एकदम शांत होकर फोन पर देख रहे थे। काईस खेलने के बाद अंताक्षरी में समय कैसे बिता पता भी नहीं चला। हमने बहुत हसी मज्जक के बाद नींद और थकावट भी अचे तरह से ट्रेन में पूरी कर दी। 26 जनवरी के सुबह 7:30 बजे उठकर हाथ मूह धोकर नाश्ता किया। हम अपना बाग पाक करके बैठ गयी और अपने पिताजी को मडगाव स्टेशन पर पहुच ने का समय फोन पे बताया। कुछ विध्यार्थी करमली स्टेशन पर उतार गए जो पणजी और मपुसा में रहने वाले थे। 10:15 को ट्रेन मडगाव स्टेशन के प्लाटोर्म नंबर 4 पर पहुच गयी। यहा तक मेरा सफर का अंत हुआ।